

8. Write Critical notes on any **two** of the following.

निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखिए।

(a) Independance of Judiciary

न्यायपालिका की स्वतंत्रता

(b) Public Interest litigation

लोकहित वाद

(c) Constitutionalism

संविधान वाद

**LL.M. (One Year) (Semester II)
Examination, 2014-15**

Law

(Compulsory Paper)

Paper : Comparative Law

Time : Three Hours

Full Marks : 100

(Write your Roll No. at the top immediately on the receipt of this question paper)

Note: Attempt any **four** question. **All** question carry equal marks.

किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. "Comparative law has been hobly of yesterday but it is destined to become the science of tomorrow. We must welcome rather than fear its influence." In the light of the above statement discuss the nature, scope and significance of comparative law.

“तुलनात्मक विधि अतीत में शौक रहा है किन्तु भविष्य का विज्ञान होगा। अतः इसके प्रभावों से भयभीत होने की अपेक्षा इसका स्वागत करना चाहिए।” उपरोक्त कथन के आलोक में तुलनात्मक विधि के प्रकृति, विषय क्षेत्र एवं महत्व की विवेचना कीजिए।

2. Critically analyse the distinctions between the common Law system and the civil law system. Highlight some of the features found in the Indian Legal system which are traditionally associated with the civil Law systems.

कामन लॉ पद्धति तथा सिविल लॉ पद्धति के बीच अन्तर का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। सिविल लॉ सिस्टम से परम्परागत रूप से सहयुक्त भारतीय विधिक व्यवस्था की कतिपय विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए।

3. " Constitution of India is neither purely federal nor unitary. It enshrines the principle that inspect of federalism, national interest is paramount. Infact it rejects the concept of competitive federalism and is based on the spirit of co operative federalism". Comment.

“भारत का संविधान न तो विशुद्ध संघात्मक है न ही एकात्मक। यह इस सिद्धान्त को प्रतिस्थापित करता है कि संघात्मक होने के बावजूद भी देशहित सर्वोपरि है। वस्तुतः यह प्रतिस्पर्धात्मक संघवाद की अवधारणा को अस्वीकार करता है तथा सहयोगकारी संघवाद की विचारधारा पर आधारित है।” टिप्पणी कीजिए।

4. Montague has said," If legislature and executive are some person or body of persons, there would be a danger of the legislative enacting oppressive laces which the executive will administer to attain for its own ends." In the light of this statement discuss the doctrine of separation of Power in India and compare it with that of the United States.

माण्टेस्क्यू न कहा है, “यदि विधायी एवं कार्यपालिकीय शक्तियां एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह में निहित हों तो खतरा उत्पन्न हो जाएगा कि विधायिका उत्पीड़क कानून बनाएगी और कार्यपालिका अपने हितों को पूरा करने के लिए उसे लागू करेगी।” इस कथन के आलोक में भारत में शक्ति प्रथककरण के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए तथा संयुक्त राज्य अमेरिका से तुलना कीजिए।

5. Explain the 'Rule of Law'. How far it is applicable in India in present scenario ? Discuss.

‘विधि शासन’ की व्याख्या कीजिए। वर्तमान परिदृश्य में भारत में यह किस सीमा तक प्रयोग किया जा रहा है ? विवेचना कीजिये।

6. Write an essay on growth and development of concept of Judicial review from Marbury V. Modision case to the present time.

मॉरबरी ब मेडिसन के वाद से वर्तमान तक न्यायिक पुर्नर्विलोकन के अवधारणा के उद्भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए।

7. What do you mean by judicial creativity ? Is there any difference between judicial creativity and judicial activism ? Discuss.

न्यायिक सृजनात्मकता से आप क्या समझते हैं ? क्या न्यायिक सृजनात्मकता एवं न्यायिक सक्रियता में कोई अन्तर है ? विवेचना कीजिए।